सृजनात्मकता के प्रमुख सिद्धान्त

1. सृजनात्मकता का प्राचीन सिद्धान्त।
2. सृजनात्मकता का जन्मजात सिद्धान्त।
3. सृजनात्मकता का वातावरणजन्य सिद्धान्त।
4. प्रमास्तिष्क का गोलार्द्ध का सिद्धान्त।
5. स्वप्रेरणा का सिद्धान्त।
6. मनोविश्लेषण सिद्धान्त।
7. अस्तित्ववाद का सिद्धान्त।
8. अन्तः दृष्टि का सिद्धान्त / पूर्णाकार / अन्तर्दृष्टिवाद (Gestalt Theory)
9. सृजनात्मकता स्तर का सिद्धान्त
10. साहचर्यवाद (Associationism)
11. अन्तर्वैयक्तिकवाद (Interpersonalism)
12. संकुलवाद (Trait Theory)

① सृजनात्मकता का प्राचीन सिद्धान्त

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त

(Psychoanalytic Theory)

फ्रायड ने कलात्मक सर्जनात्मक में मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की। फ्रायड ने लियोनार्डो डा० विन्सी कार्य तथा अन्य लेखकों का अध्ययन किया तथा उदात्तीकरण की अवधारणा का विकास किया। फ्रायड मानता है कि जीवन की कठिनाइयों के साथ अनुकूलन के लिये तीन बातें आवश्यक हैं —

(i) रुचि का सशक्त विचलन जो कपट की चिन्ता कम करे।
(ii) परितुष्टि हेतु प्रतिस्थापितकरण
(iii) उत्तेजनात्मक उपादान (Intoxicating Substances) स्थानापन्नता में देखी गई है।

फ्रायड के अनुसार — सृजनात्मक व्यक्ति यथार्थ से हट जाता है, क्योंकि मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार की आवश्यकता को सन्तुष्ट नहीं कर पाता वह सर्जनात्मक क्रियाओं द्वारा अपनी प्रबल आकांक्षा तथा इच्छाओं को सन्तुष्ट कर सकता है। यही कारण है कि उदात्तीकरण ने उच्च मानसिक स्थिति में अचेतन मन की भूमिका को सृजनात्मक कार्य में अंकित किया है। पूर्व चेतना प्रणाली, सृजनात्मकता का आवश्यक तत्व है जब तक पूर्व चेतना विकसित नहीं होगी, सर्जनात्मकता विकसित नहीं होगी।

साहचर्यवाद (Associationism) —

सर्जनात्मकता को साहचर्य के साथ जोड़ने का कार्य पहले पहल रिबोट (Ribot 1960) ने किया था। उसका विचार है कि साहचर्य वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानसिक स्थिति इस प्रकार जुड़ जाती है, जिससे वह जागृत (Evoke) होती है। साहचर्यवाद चिन्तन की योग्यता तथा उत्साहवर्धक के संयोगों द्वारा उपायोगों पर विचार करता है सर्जनात्मकता इन संयोगों का पुनर्गठन है।

मेडनिक ने सृजनात्मक चिन्तन तथा साहचर्य की व्याख्या करते हुए कहा है — "हम सर्जनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया को नवीन संगठन

Scanned with CamScanner

साहचर्य तत्वों की रचना से जोड़ते हैं। ये किसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। नवीन संगठन के तत्वों में जितनी घनिष्ठता होगी उतनी सघन सर्जनात्मक प्रक्रिया होगी।

मेडनिक का विचार है कि वह प्रत्येक दशा जो साहचर्य के तत्वों को आकस्मिक सातत्य में परिवर्तित करते हैं वे द्रुतगामी सृजनात्मक समाधान को प्रस्तुत करते हैं। तीन प्रकार के सृजनात्मक साहचर्य होते हैं — (1) निरभ्रता (Serendipity), समानता (Similarity) तथा मध्यस्थता (Mediation)

इसके अनेक पक्ष हैं जहाँ पर वैयक्तिक भेद प्रकट होते हैं और उनमें सातत्यता की खोज करनी पड़ती है जैसे — साहचर्य की आवश्यकता, साहचर्य का उच्चोच्चक्रम, साहचर्य की संख्या, ज्ञानात्मक या व्यक्तिगत शैली तथा सर्जनात्मकता संगठन का चयन आदि।

मेडनिक के विचार को अन्वीक्षा तथा विभ्रम (Trial and error) का उत्तम अभिव्यक्ति कहा गया है।

कैम्पबेल (Campbell) ने भी इसी स्थिति को स्वीकार किया है। उसके अनुसार सर्जनात्मकता में दो बात निहित होती है —

(1) अन्ध रूपान्तरण (Blind Variation)
(2) चयनित अवधारण (Selective retention)

पहले में समाधान से सम्बन्धित भिन्नता होती है और दूसरे में प्रकार्यात्मक स्थिति में आन्तरिक भिन्नता होती है। जब अन्ध रूपान्तरण एक विचार को प्रयास में ढालता है तब चयनित मापदण्ड प्रकट होता है और सर्जनात्मकता अस्तित्व में आती है।

3 — पूर्णाकार या अन्तर्दृष्टिवाद (Gestalt Theory)

वर्दीमर ने सृजनात्मक चिन्तन तथा समस्या समाधान, उत्पादक चिन्तन, पारस्परिक तर्क और साहचर्य मत के लिये दोनों आगमनों (Approaches)

Scanned with CamScanner

पर विचार तथा उनकी आलोचना की। उसका कथन है कि मनोविश्लेषणात्मकवाद तथा साहचर्यवाद, दोनों ही घटनों के साथ न्याय नहीं कर सकते हैं इसलिए उसने पूर्णाकार या अन्तर्दृष्टि के मत को अवबोध की अभिवृद्धि करने एवं पूर्णाकार करने एवं चिंतन की प्रक्रिया की खोज करने हेतु प्रस्तावित किया है। उसने सृजनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया का वर्णन इस प्रकार किया है - क्षेत्र का तार्किक बिन्दु केन्द्रीय हो जाता है परन्तु वह पृथक नहीं होता। यह क्षेत्र में संघटन रूप धारण कर लेता है, अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। संगठन तथा समूहीकरण उसे स्पष्ट हो जाते हैं।

५ - अस्तित्ववाद (Existentialism)

अस्तित्ववाद वैचारिक रूप से पूर्णाकार के अधिक निकट है। अस्तित्ववाद सम्पूर्ण

सृजनात्मकता एवं बुद्धि में अन्तर

"Difference between Creativity and Intelligence"

बुद्धि और सृजनशीलता दोनों ही संज्ञानात्मक क्षमताएँ हैं किन्तु दोनों में कुछ समानता के होते हुए भी बहुत उच्च कोटि का सहसम्बन्ध नहीं है। वैलास और कोगन "Walleach & Kogan" 1965 — ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि सृजनशीलता और बुद्धि दो अलग-2 संकल्पनाएं हैं उनका मापन भी भिन्न-2 तरीकों से किया जा सकता है उन्हें एक ही तरीके से नहीं मापा जा सकता। इनके अनुसार अपसारी, अभिसारी चिंतन में अन्तर स्पष्ट है जैसे — (1) यह एक स्थापित तथ्य है कि एक विध चिंतन (Convergent Thinking) बुद्धि का आधार जबकि बहुविध चिंतन (Divergent thinking) सृजनात्मकता का आधार है। एक-विध चिंतन में व्यक्ति की प्रवृति एक ही विचार या अनुक्रिया ढूंढने में होती, परन्तु बहु-विध चिंतन में यथा संभव कई अनुक्रियाओं तथा विचारों का समावेश होता है।

(ii) प्रायः देखा गया है उच्च सृजनकर्ताओं में उच्च-स्तरीय बुद्धि होती है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि एक बुद्धिमान व्यक्ति सृजनकर्ता भी हो। सृजनात्मक योग्यता न होते हुए भी व्यक्ति में उच्च बुद्धि हो सकती है।

(iii) बुद्धि-परीक्षा में ज्ञानात्मक-व्यवहार की गति तथा शुद्धता पर बल दिया जाता है जबकि सृजनात्मकता परीक्षाओं में नवीनता, लचीलापन तथा मौलिकता पर अधिक बल दिया गया है।

कुछ भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने भी बुद्धि और सृजनशीलता में सम्बन्ध ज्ञात करने का प्रयास किया है। कुमार (1981) और रैना (1968) ने टोरेन्स के सृजनशीलता के परीक्षण, जोलोटा के बुद्धि परीक्षण और उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों में सहसम्बन्ध निकाला और सृजनशीलता तथा बुद्धि में निम्न स्तर का सहसम्बन्ध पाया जाता है।

निष्कर्ष । इन विभिन्न अध्ययनों के आधार पर यह तो स्पष्ट है कि सृजनशीलता और बुद्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि सभी उच्च बुद्धि के लोग उच्च स्तर के सृजनशील भी हो। अन्य अनेक मनोवैज्ञानिकों ने सृजनशीलता का सम्बन्ध अभिरुचि, समायोजन, चिन्ता एवं व्यक्तित्व के अन्य आयामों के साथ जोड़ा है और इस आधार पर विद्यार्थी का चार भागों में वर्ग है —

1. उच्च सृजनशीलता उच्च बुद्धि —
2. उच्च सृजनशीलता निम्न बुद्धि
3. निम्न सृजनशीलता उच्च बुद्धि
4. निम्न सृजनशीलता निम्न बुद्धि —

Scanned with CamScanner

सृजनात्मकता के साथ शिक्षक और विद्यालय का क्या सम्बन्ध है।

What is the relation of Creativity with Teachers and School

परिचय ! बालकों में सृजनात्मकता का विकास करना, व्यक्ति तथा समाज दोनों के हित में है। क्रो & क्रो के अनुसार - " जैसे-जैसे बालकों में प्रतिबोध एवं संबोध का विकास होता जाता है वह अपने वातावरण में परिवर्तन करना चाहता है। जबकि प्रौढ़ व्यक्ति परिस्थितिनुगत यथार्थ हैं। छोटा बालक अत्यधिक कल्पनाशील होता है। वह अपने खिलौने को अलग ले जाता है और उनको दूसरे में ले जाता है। घटनाओं की पुनर्गणना में वह इतना व्यस्त हो जाता है कि उनको पहचान में भी कठिनाई होने लगती है।"

शिक्षक को चाहिए कि बालकों में सृजनात्मकता का विकास करने के लिए निम्न उपाय करे।

1 - समस्या के स्तर की पहचान (Identification of Problem)
2 - तथ्यों का अधिगम (Learning the facts)
3 - मौलिकता (Originality)
4 - मूल्यांकन (Evaluation)
5 - जाँच (Verification)
6 - पाठ्य-सहगामी क्रियायें (Co - Curricular Activities)
आदि।

"सृजनात्मकता और विद्यालय"

Creativity and School

विद्यालयों में सृजनात्मकता के विकास की सर्वाधिक सम्भावनायें तथा अवसर विद्यमान रहते हैं। विद्यालय की स्वच्छता तथा उसका सौन्दर्यीकरण आवश्यक है। छात्रों में समूह बनाकर उनकी प्रतियोगितायें कराई जा सकती हैं। विजेता समूह तथा छात्रों को विद्यालय की सभा के समक्ष प्रशंसा देनी चाहिए तथा पराजित समूह को सांत्वना देनी चाहिए।

1 - विद्यालय का वातावरण —